ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-11* December- 2017
Innovation The Research Concept

भाषा बहता नीर

सविता अधाना
सह प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग,
इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय,
मीरपुर, रेवाडी

सारांश

मानव को मानव बनाने में हमारी भाषा का बहुत बड़ा हाथ है। भाषा की आवश्यकता ने ही मनुष्य को इस सभ्यता व संस्कृति का प्रवर्त्तक बनाया। भाषा विश्व में अनेक प्रकार के रूपों और विशेषताओं को अपनाए हुए है। मानव मन की अभिव्यक्ति उसके मुख से निकलकर ही सार्थक रूप में भाषा बनती है जो हमें एक–दूसरे से जोड़े रखती है। अगर हमारे पास भाषा नहीं होती तो हमारा विकास नहीं हो पाता बल्कि मानव केवल एक पशु ही रह जाता। भाषा जबसे अस्तित्व में आई तब से आज तक अनवरत रूप से बढ़ी ही चली जा रही है।

मुख्य शब्द : भाषा की उत्पत्ति सिद्धान्त, भाषा का मौखिक वाचिक रूप में प्रयोग, भाषा का मूल कार्य, भाषा परिवार, आकृति मूलक वर्गीकरण, भाशिक स्तर आदि।

प्रस्तावना

विश्व की उत्पत्ति और विकास में अनेक महत्त्वपूर्ण तत्वों का योगदान रहा है। इन्हीं में से एक है भाषा। भाषा ने मनुष्य की संवेदना को रूप और षब्द दिए और इस संसार को व्यक्त करने के लिए भाषा का योगदान अतुलनीय है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तावित अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नवत प्रस्तुत हैः–

1. हमारे जीवन में अभिव्यक्ति की आवश्यकता को बताना।
2. अभिव्यक्ति के लिए भाषा का महत्त्व बताना।
3. भाषा को परिभाशित कर विश्व की विशेष भाषाओं से परिचय करना।
4. भाषा परिवारों और उनकी विशेषताओं से अवगत कराना।
5. भाशिक संरचना के तथ्यों को बताना।

उपकल्पना

प्रस्तावित शोध के विशय में यह परिकल्पना ली गई है कि मानव मन की अभिव्यक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण साधन भाषा से हमारा किस प्रकार से विकास हुआ और भाषा से हम क्यों इतने जुड़े हुए हैं।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध पत्र की अध्ययन विधि– मुख्य रूप से विश्लेषणात्मक है जो सूचनाओं हेतु पुस्तकों, शोधपत्रों, जर्नल्स, समाचार पत्र, इंटरनेट आदि का आश्रय लिया गया है।

साहित्यावलोकन

'भाषा बहता नीर' भाषा को हम लोग एक ऐसी परम्परा के मूर्त रूप में देख सकते हैं जो सदियों से बही चली आ रही है। यह भाषा रूपी धारा अनेक युगों की विशेषताओं, परिवर्तनों और अपने समर्पण को लेकर निरन्तर बह रही है। भाषा को बहते हुए पानी की धारा से जोड़ने के पीछे यही कारण है कि जिस प्रकार एक विषाल वेगवती जलधारा अपने रास्ते की सभी कठिनाईयों और बाधाओं को तोड़ती हुई आगे बढ़ जाती है उसी प्रकार भाषा भी भाव व भावनाओं को मूर्त रूप देकर, युगों–युगों से आगे ही बढ़ती जा रही है। समय की परतों में हो सकता है कि कुछ हल्के स्वर दब भी गये हों। लेकिन विकास और उसकी उपयोगिता के कवच ने इसे अमर बना दिया है। भाषा ने ही वानर को मानव बना दिया, यह कहना असंगत नहीं होगा। क्योंकि उस प्राचीन समय व सभ्यता को अगर समझें तो जान पड़ता है कि किस प्रकार मनुष्य ने अपने हाव–भाव और अपने बुद्धि कौशल से मन में उठने वाली अनेक जिज्ञासाओं, कौतुहल व विचलन को धीरे–धीरे अपने मुख से अनेक प्रकार की ध्वनियाँ निकाल कर अपने हर्श, विशाद, उल्लास, क्रोध, प्रेम, भूख, प्यास आदि के लिए प्रयोग किया होगा।

उत्पत्ति की खोज और उसके विकास के विशय में हमारे पास अनेक सिद्धान्त व साक्ष्य माने जाते हैं जैसे– देवी सिद्धान्त के अन्तर्गत जिसमें भाषा को

वैदिक धर्मावलम्बी वेद को अनादि और ईष्वर निर्मित मानकर इसे नित्य कहते हैं–

''दैवी वाचमजनयन्त देवाः
ता विश्वरूपा पश्वो वदान्ति।''

(ऋग्वेद 8–1000–11, पृ0 40, भाषा विज्ञान और मानक हिन्दी, डॉ0 नरेश मिश्र अभिनव प्रकाशन)[1]

इसके साथ–साथ ही संकेत सिद्धान्त, धातु सिद्धान्त, आवेग सिद्धान्त, यो–हे–हो सिद्धान्त, अनुकरण सिद्धान्त, इंगित सिद्धान्त, सम्पर्क सिद्धान्त, संगीत सिद्धान्त, समन्वय सिद्धान्त आदि कितने ही भाषा उत्पत्ति के सिद्धान्त अपने विवेकशील व तर्क शक्ति से उत्पत्ति प्रमाण देने के लिए प्रयास करते नजर आए। इस प्रकार अन्त में यही निश्कर्श निकला कि ध्वनियों का आधार पाकर भाषा, षब्द, पद, वाक्य और अर्थ अभिव्यक्ति के रूप में हमें प्राप्त हो गई। भाषा का हमारे विकास के लिए बहुत महत्त्व है। यह बात कोई नहीं नकार सकता कि यदि भाषा न होती तो हम षिश्ट मानव कैसे बन पाते? और मन, बुद्धि की हलचल व भावों को महसूस कर किसी के सामने कैसे व्यक्त कर पाते? भाषा ने ही भावों को अभिव्यक्ति प्रदान की हैं यथा ''मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विशय में अपनी इच्छा और मति का आदान–प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है उसे भाषा कहते हैं।'' डा0 श्याम सुन्दरदास।

(पृ0 1 हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिश्ठ इतिहास, डा0 गोविंद पांडेय (अभिव्यक्ति प्रकाशन)[2]

विश्व में लगभग 3000 भाषाएँ मानी जाती हैं। ये भाषाएँ मुख्य रूप से तीन प्रकार के रूप में स्वीकृत हैं– पहला है भाषा का मौखिक या वाचिक रूप और दूसरा है सांकेतिक रूप व तीसरा भाषा को स्थायीत्व और मानकीकृत व परिनिश्ठ करने वाला रूप है लिखित। मूल रूप से भाषा को केवल मुखोच्चरित ही माना जाता है। आगे के दोनों भाषा रूप मुखोच्चरित भाषा के सहायक के रूप में काम करते हैं यथा– डा0 भोलानाथ तिवारी के अनुसार, 'भाषा निष्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से निःसृत वह सार्थक ध्वनि समष्टि है जिसका विष्लेशण और अध्ययन हो सके।'' (पृ0 1 वहीं)[3]

भाषा के विशय में बात करते समय हमें इसके मूल तत्व के रूप में भाव को समझना चाहिए क्योंकि भाषा के उच्चारण–श्रवण पक्ष को वाक् कहते हैं तो बोध पक्ष को भाषा। भाषा का स्वरूप सूक्ष्म और भावात्मक है तो भाषा में अन्तर्निहित वाक का स्वरूप स्थूल और भौतिक है। अमर कोश में भाषा को वाणी का पर्याय बताते हुए कहा गया है– 'ब्रह्म तु भारती भाषा गीर् वाक् वाणी सरस्वती।'' (पृ0 19 भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा डा0 नरेश मिश्र, अभिनव प्रकाशन)[4]

भाषा का मूल कार्य सम्प्रेशण है। यह वह क्रिया है जो भावों की संवाहिका का कार्य करती है। सम्प्रेशण में एक वक्ता और श्रोता के विचारों के आदान–प्रदान का माध्यम भाषा माध्यम के रूप में करती है। सम्प्रेशण तभी सफल माना जाता है जब वक्ता व श्रोता के बोध का साधन वह भाषा होनी चाहिए जो दोनों को समझ आए यथा– रोमन याकोश्सन के अनुसार, 'वक्ता, श्रोता के लिए जो कोड़, देगा वह संदर्भमूलक होगा क्योंकि सम्प्रेशण सन्दर्भ के बिना असम्भव है।'' (वहीं, पृ0 5)[5]

संसार में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं क्योंकि जैसे–जैसे वह भौगोलिक व सांस्कृतिक परिवेषों में आगे बढ़ती है और स्थान विशेष की आवष्यकताओं अनुरूप अपने आप को ढाल लेती है तभी तो कहा भी गया है 'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी।'

परिवार के आधार पर संसार की समस्त भाषाओं को 12 भाषा परिवारों में बांटा गया है। परन्तु कुछ विद्वान इस बात से सहमति नहीं रखते हैं। डा0 भोलानाथ तिवारी व जर्मन विद्वान विटहेल्य फॉन हम्बोल्डट ने इस बात पर विस्तार से विचार करके संसार में कुल 13 परिवार माने थे।'' (भाषा विज्ञान पृ0 108 डा0 भोलानाथ तिवारी किताब महल)[6] ये परिवार निम्नलिखित हैं:–

1. द्रविड़ भाषा परिवार,
2. चीनी अथवा एकाक्षरी परिवार,
3. सैमेटिक–हैमेटिक (सामी–हामी परिवार),
4. यूराल–अल्टाइक परिवार,
5. काकेशियस परिवार,
6. जापानी–कोरियाई परिवार
7. मलय–पॉलिनेयश परिवार,
8. आस्ट्रो–एशियाई परिवार,
9. बुषमैन परिवार,
10. बांटू परिवार,
11. सूडान परिवार,
12. अमरीकी परिवार,
13. भारोपीय परिवार आदि।

भाषा के आकृति–मूलक वर्गीकरण को भी बहुत प्रसिद्धि प्राप्त हुई। यह वर्गीकरण को भी वर्गीकरण, रूपतामक, व्याकरणिक, वाक्यात्मक, पदात्मक, पदाश्रित के नाम से भी जाना जाता है। विश्व की भाषाओं का आकृतिमूलक वर्गीकरण सर्वप्रथम प्रो0 श्लेगल ने किया था। (पृ0 3 हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, गोविंद, पाण्डेय, सरस्वती पाण्डेय अभिव्यक्ति प्रकाशन)[7]

विश्व की अनेक भाषाएँ अपने–अपने संरचनात्मक रूप में भिन्नताएँ लिए हुए हैं। भाशिक संरचना में भाषा में अनेक स्तर आते हैं। जैसे हिन्दी भाषा में ध्वनि स्तर, षब्द स्तर, रूप स्तर, वाक्य स्तर होता है। भाशिक संरचना में विभिन्न स्तर के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद हैं। हॉकिट पांच स्तर मानते हैं– 1. व्याकरणिक, 2. स्वनिमिक, 3. रूपस्वनिमिक, 4. आर्थी, 5. स्वनिक (भाषा विज्ञान पृ0 16, डा0 भोलानाथ तिवारी किताब महल)[8]

वहीं डा0 भोलानाथ तिवारी जी अपने निजी मत से भाशिक संरचना के मूलतः चार स्तर स्वीकार करते हैं। भाषा के साथ अर्थ का सम्बन्ध ऐसा है जैसा कि षरीर के साथ आत्मा का, भाषा से यदि अर्थ की प्राप्ति ही नहीं होगी तो भाषा का अस्तित्व ही नहीं रहेगा। भाषा के दो आधार माने जाते हैं। एक मानसिक (Psychological aspect) और दूसरा (Physical aspect)। इन दोनों के मिलने से भाषा बनती है। इनको ही बाह्य भाषा (Outer

speech) तथा आन्तरिक भाषा को (Inner Speech) भी कहा जाता है।

निष्कर्ष

भाषा की अनेक विशेषताएँ और प्रकृति हैं जैसे– भाषा एक अर्जित सम्पत्ति है अर्थात् भाषा को हम प्रयत्न करके सीखते हैं। भाषा की एक अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता है। भाषा की अनुकरण से बहुत घनिष्ठता है। भाषा अनुकरण करते–करते स्वयं ही पीछे–पीछे आ जाती है। इसके अतिरिक्त भाषा की अन्य विशेषता है भाषा संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर जाती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *ऋग्वेद 8–1000–11, पृ0 40, भाषा विज्ञान और मानक हिन्दी, डॉ0 नरेश मिश्र अभिनव प्रकाशन।*
2. *पृ0 1 हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, डा0 गोविंद पांडेय अभिव्यक्ति प्रकाशन।*
3. *पृ0 1 वहीं।*
4. *पृ0 19 भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा डा0 नरेश मिश्र, अभिनव प्रकाशन।*
5. *वहीं, पृ0 5।*
6. *भाषा विज्ञान पृ0 108 डा0 भोलानाथ तिवारी किताब महल।*
7. *पृ0 3 हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, गोविंद, पाण्डेय, सरस्वती पाण्डेय अभिव्यक्ति प्रकाशन।*
8. *भाषा विज्ञान पृ0 16, डा0 भोलानाथ तिवारी किताब महल।*